विशुद्ध आनन्द

आनन्दमय जन्मदिवस के उपलक्ष्य में प्रस्तुत

श्रीगुरुमाई के साथ घटित कुछ प्रसंग

श्रीगुरुमाई के साथ प्रसंग : १

लीलावती स्टूअर्ट

वर्ष २०१६ के शीतकालीन पर्वों के दौरान मैं और मेरी किशोरवय बेटी, अलीशा सेवा के लिए श्री मुक्तानन्द आश्रम गए थे। क्रिस्मस के दिन, श्रीनिलय हॉल में, गुरुमाई जी के साथ एक शानदार सत्संग के बाद, सभी लोग क्रिस्मस के उपलक्ष्य में आयोजित, दोपहर के भोजन हेतु अन्नपूर्णा भोजन-कक्ष की ओर गए।

इसके कुछ ही देर बाद, श्रीनिलय हॉल से निधि-चौक की ओर जाते हुए, गुरुमाई जी ने अलीशा और मुझे वहीं पास में खड़े देखा। एक बड़ी-सी मुस्कान के साथ गुरुमाई जी ने हम दोनों से कहा, "आनन्द फैलाओ।" उन्होंने कहा कि हम गाकर आनन्द फैलाएँ।

अलीशा और मैं, दोनों तुरन्त गाने लगे। और तब गुरुमाई जी ने इशारे से कहा कि हम गाते-गाते उनके आगे चलते हुए, उत्सव के लिए सजाए गए भव्य दरवाज़ों से होकर भोजन-कक्ष में प्रवेश करें।

गुरुमाई जी ने हमसे कहा था, "आनन्द फैलाओ," इसलिए गाते हुए मैं कल्पना कर रही थी कि अपने गायन के माध्यम से मैं गुरुमाई जी के प्रेम को अन्नपूर्णा में मौजूद सभी तक पहुँचा रही हूँ। "आनन्द फैलाने" का गुरुमाई जी का संकल्प साकार हो रहा था—मेरे अन्दर भी और बाहर भी। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं इस संकल्प के साथ बिलकुल एकलय हो चुकी हूँ और इसके फलस्वरूप भोजन-कक्ष में इतनी खुशी फैली हुई थी कि स्पष्ट तौर पर महसूस हो रही थी।

गाते-गाते जब हम अन्नपूर्णा के बीच से गुज़र रहे थे, तब गुरुमाई जी ने अलीशा और मुझसे कहा कि हम उन सभी मेज़ों के बीच में से होकर चलें जहाँ लोग बैठे हुए थे!

फिर गुरुमाई जी ने अलीशा से दूसरा एक गीत गाने को कहा। अलीशा ने जो गीत चुना वह था, "I Love You a Bushel and a Peck" [आई लव यू ए बुशेल ऐण्ड ए पॅक]। यह वह गीत था जो उसने इस उम्मीद में सीखा था कि वह उसे गुरुमाई जी के लिए गा पाएगी। इतना ही नहीं, उसे प्रसाद के रूप में गुरुमाई जी से एक टी-शर्ट मिली थी जिस पर इस गीत के बोल "I Love You a

Bushel and a Peck" छपे हुए थे, अतः इस उपहार के लिए वह अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहती थी। अलीशा की इच्छा अब पूरी हो गई थी तो उसने पूरे दिल से वह गीत गाया!

फिर गुरुमाई जी ने ऑस्ट्रेलिया से आए एक व्यक्ति से कहा कि वह भी अलीशा और मेरे साथ गाए। हम गाते रहे, आनन्द बढ़ता ही जा रहा था, इतना कि हम आनन्द की मस्ती में झूम-झूमकर नृत्य करने लगे। और जैसे-जैसे हम गाते-झूमते हुए सारी मेज़ों के बीच से होकर नृत्य करते जा रहे थे, तब जो-जो चेहरा मुझे दिख रहा था, वह प्रकाश से दमक रहा था। बाक़ी लोग भी एक-एक करके हमारे साथ गाने लगे, नृत्य करने लगे, तालियाँ बजाने लगे। ऐसा लग रहा था मानो पूरा-का-पूरा भोजन-कक्ष और वहाँ मौजूद हर कोई आनन्द का एक महासागर ही बन गया हो!

गुरुमाई जी का आनन्द हम सब में प्रवाहित हो रहा था। वह बड़ा ही जीवन्त अनुभव था जिसके लिए मैं गुरुमाई जी के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ।

गुरुमाई जी, आपको पूरे हृदय से धन्यवाद।

***

श्रीगुरुमाई के साथ प्रसंग : २

जयलक्ष्मी लेज़ामा

वर्ष २००९ में ठण्ड के मौसम के दौरान मैं सेवा करने श्री मुक्तानन्द आश्रम गई थी। उस वर्ष के लिए गुरुमाई जी का सन्देश था, 'ॐ'। उस समय मैं अठारह वर्ष की थी।

घर लौटने के एक दिन पूर्व, श्रीनिलय हॉल में श्रीगुरुमाई के साथ सत्संग होने वाला था। सत्संग के समापन पर गुरुमाई जी नीचे वाली लॉबी की ओर जाने वाली सीढ़ियों के पास खड़ी थीं और कुछ लोगों से बात कर रही थीं। उन्हें देखकर मैंने अपने हृदय में आनन्द की बड़ी-सी लहर उठती महसूस की। अपनी श्रीगुरु के दर्शन पाकर मैं धन्य हो गई, मुझे कृतज्ञता अनुभव हो रही थी। मैंने गुरुमाई जी से कहा कि मैं अगले दिन घर लौटने वाली हूँ। गुरुमाई जी ने बहुत ही प्यार से और अपनेपन के साथ मुझे विदा किया। ऐसा लगा कि इससे बढ़कर विदाई तो हो ही नहीं सकती।

मैंने सोचा था कि मैं अगले दिन दोपहर बाद निकलूँगी, इसलिए प्रस्थान के दिन गुरुमाई जी के दर्शन होना तो लगभग असम्भव ही है। परन्तु, अगले दिन श्रीनिलय हॉल में गुरुमाई जी के साथ एक और सत्संग का आयोजन किया गया था। इस सत्संग के बाद, गुरुमाई जी उसी जगह पर खड़ी होकर कुछ लोगों से बात कर रही थीं जहाँ वे पिछले दिन खड़ी थीं।

मैं भी जाकर उन लोगों के साथ खड़ी हो गई। गुरुमाई जी ने मुझसे पूछा, "तुम कब निकल रही हो?"

मैंने कहा कि मैं उसी दिन दोपहर बाद निकलूँगी। गुरुमाई जी ने मुझे अपने पास आने का इशारा किया। उन्होंने कुछ पल के लिए मेरे हाथों को अपने हाथों में लिया। फिर गुरुमाई जी ने कहा कि इस जगह पर आवाज़ ख़ास तौर पर बहुत अच्छी तरह से सुनाई देती है और उन्होंने सभी से 'ॐ' गाने के लिए कहा।

हम सब गाने लगे और यह पावन अक्षर दीवारों से प्रतिध्वनित होकर गूँज उठा जिससे शक्तिपूरित स्पन्दनों का एक मण्डल-सा बनने लगा। गुरुमाई जी भी मुक्त रूप से ऊँचे स्वर से लेकर नीचे के स्वर तक 'ॐ' गा रही थीं। उनकी आवाज़ मेरे हृदय को भेद रही थी और 'ॐ' के वे स्पन्दन मेरी पूरी सत्ता में गूँज रहे थे। मैंने सोचा, काश यह पल यहीं थम जाए! मैं गुरुमाई जी की ओर देख रही थी और वे मेरी ओर देख रही थीं। प्रेम से पूरित उस पल में जब गुरुमाई जी की नज़रें मुझसे मिलीं तो मेरे सारे विचार विलीन हो गए और मेरा हृदय खुल गया। हम वहाँ थे जहाँ समय व स्थान का एहसास ही नहीं रह गया था।

हम कुछ पल 'ॐ' का गायन करते रहे और फिर वे ध्वनि-तरंगें क्रमशः धीमी होती गईं; अन्ततः वह ध्वनि मौन में विलीन हो गई। वातावरण शुद्ध स्पन्दनों से व्याप्त था और हम सब उनका रसास्वादन कर रहे थे।

बाद में, जब मैं अपने इस अनुभव को मन में धारण किए ध्यान करने बैठी तो मेरी आँखों से आनन्दाश्रु बहने लगे। तब मुझे एहसास हुआ कि मुझे विशुद्ध आनन्द की, पूर्ण आनन्द की अनुभूति हुई है।

घर लौटकर मैंने अपने अनुभव को आत्मसात् करने का अभ्यास शुरू किया—मैं एक धारणा के रूप में कल्पना करती कि मैं गुरुमाई जी के साथ 'ॐ' गा रही हूँ और उसी के साथ मैं ध्यान में उतरती और ध्यान करते समय मैं मन्त्र के रूप में 'ॐ' का जप भी करती। इस तरह, वह सचमुच एक परिपूर्ण विदाई थी—उस विदाई में कुछ था जिसे मैं अपने साथ घर ला सकी।

© २०१७ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।